DEBALI

WALL-MAGAZINE

2022-2023(III)

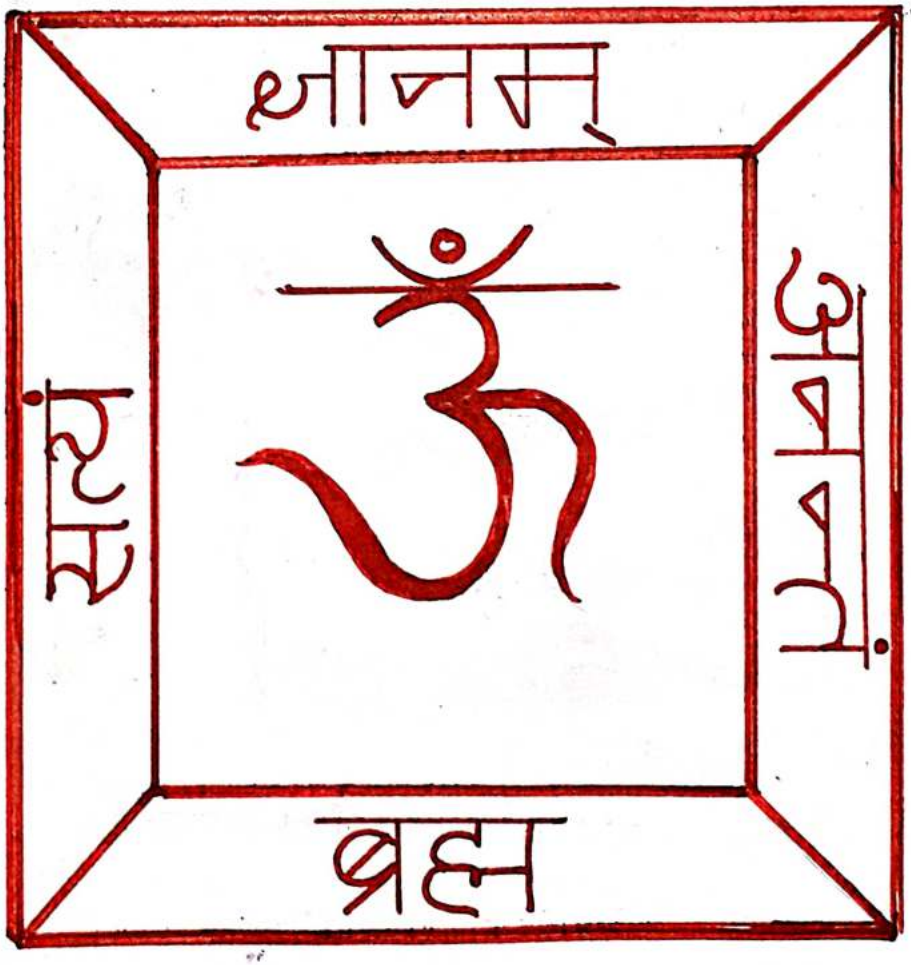

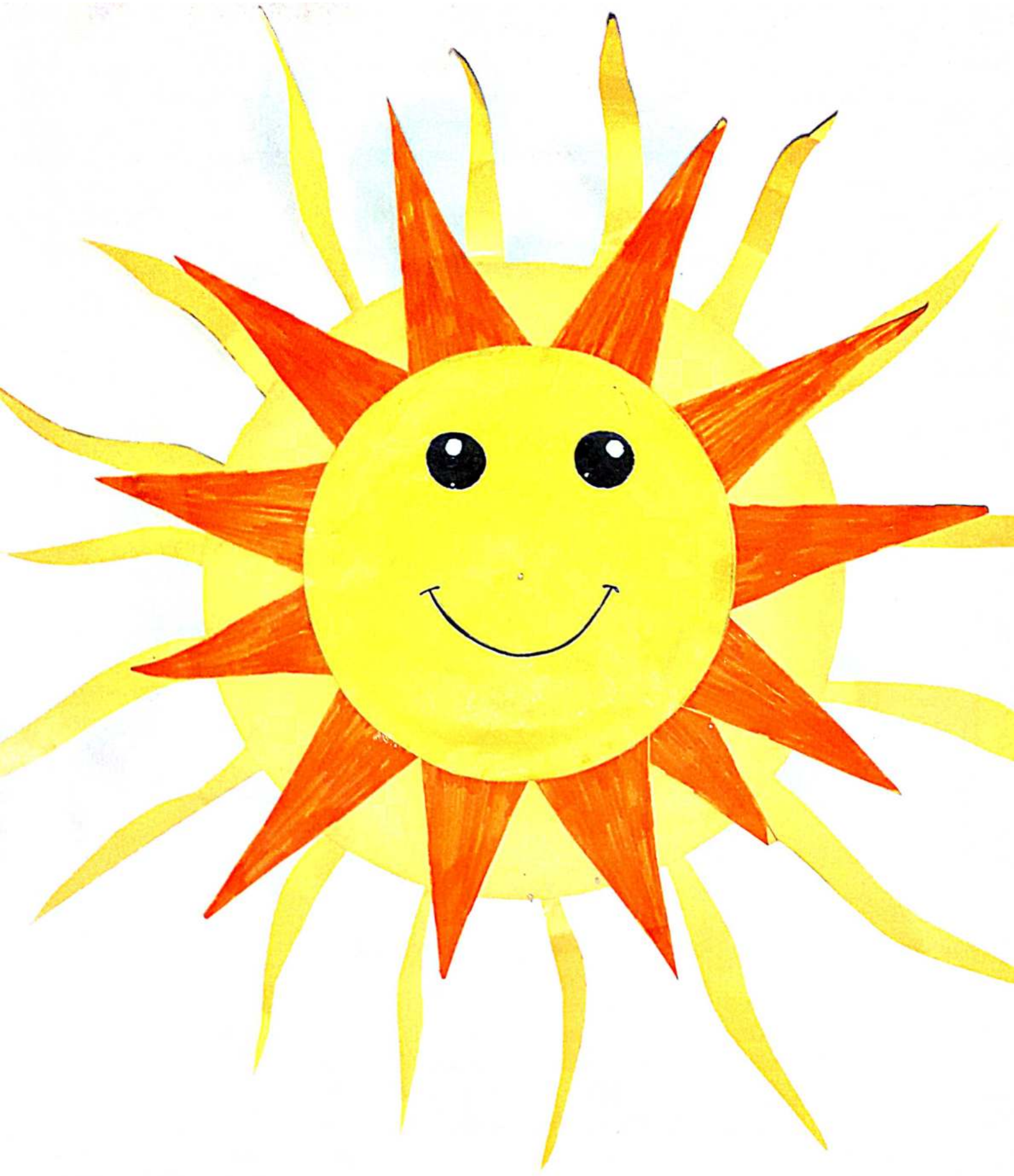

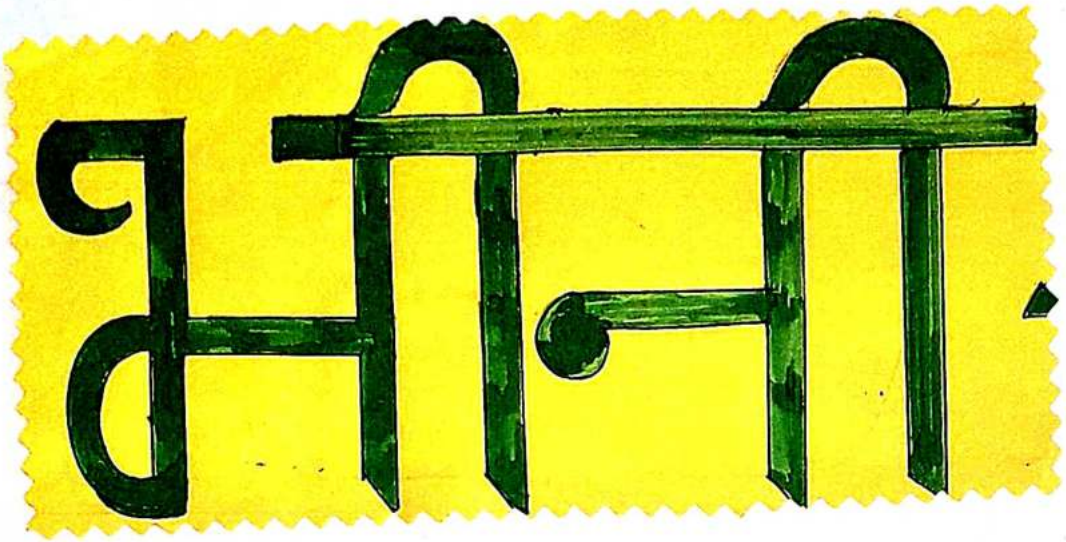
मनी

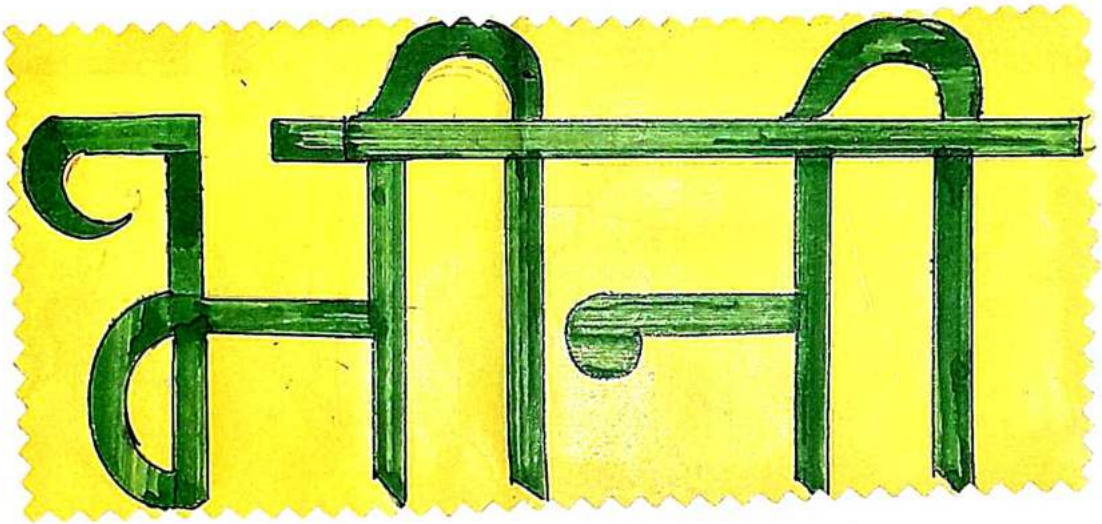
मनी

धूप

संपादकीय

भीनी-भीनी धूप

छत आंगन में आकर बैठें, तन मन को बहलाती धूप।
गर्मी में कर्कश हो जाए, सर्दी में मुस्काये धूप।
चले जोर से ठंड हवायें, झुक करके शरमाई धूप

बनते कितने उसके रूप, फूलों के संग महके धूप।
अंधकार को दूर भगाये, दुश्मन कोई नहीं डराये,
बादल कोहरा कितना घेरे, कभी नहीं घबराई धूप।

धूप प्रकृति का अनुपम उपहार है। सर्दियों में धूप सुहानी होती है। सर्दियों की बात ही ऐसी है जीव जंतु, पक्षी, मनुष्य तथा ईश्वर तक इसके आगमन से प्रफुल्लित होते हैं। अश्विन और कार्तिक शरद के दो मास होते हैं। सर्दियों में आकाश निर्मल और कहीं कहीं श्वेत वर्ण मेघ युक्त होता है। सर्दियों में रातें ठंडी और सुहावनी होती हैं। वन कुमुद और मालती के फूलों से सुशोभित होते हैं। सरोवर कमलों सहित हंसो से शोभायमान होते हैं। अनगिनत तारों की चमक और चंद्रमा की चाँदनी से रात्री का अंधकार दूर हो जाता है। संसार ऐसा लगता है मानो दूध के सागर में स्नान कर रहा हो।

में सर्दियों में आलस्य के स्थान पर में चुस्ती और कार्य करने का उत्साह बढ़ जाता है। फल और सब्जियों की बहार आ जाती है।

इस पत्रिका के माध्यम से छात्राओं को अवगत कराना चाहते हैं कि जीवन में हर एक पल का आनंद लेना चाहिए। मुसीबत से भागना नहीं बल्कि मुसीबत से डट कर सामना करना चाहिए, जिस प्रकार सर्दियों में धूप बादल या कोहरा किसी से भी घिरा हो परंतु कभी नहीं घबराये धूप अंधकार को दूर भगाये तथा सर्दी में मुस्काये धूप।

अगला संस्करण

"बसंत की पुरवाई"

BHINI- BHINI DHUP
Priti Kumari ('B.Ed 'C') Roll no- 103

भीनी - भीनी धूप

Pushpa kumari
D. El. Ed[22-24]

मीनी-मीनी धूप

जब सन-सनी हवा खोजवाती है,
मीनी-मीनी धूप बस याद आती है।
दिल-दुखाते रोजमर्रा के काम,
सब चाहे रजाई में घुस कर करे आराम।
फिर जब आती मीनी-मीनी धूप,
सब को भाती मीनी-मीनी धूप।

किर-किर करके बजते दाँत,
सर्दी में जम जाते हाथ।
ऊनी स्वेटर भाये मन को,
मीनी-मीनी धूप ललचाये मन को।

दिवाली के बाद आती मीनी-मीनी धूप,
संग अपने प्राकृतिक सौन्दर्य भी लाती।
बस देख इसको मुस्काती, प्रकृति झुमती गाती,
देखो मीनी-मीनी धूप जब आती।

नयनों में सुकुन लाती देखो धूप है आती,
सबको मन भाती मीनी-मीनी धूप जब आती।

Rambha Kumari
D.El.Ed (2022-24)
Roll No.-22

भीनी-भीनी धूप

छत आँगन में आकर बैठे,
तन-मन को बहलाती धूप।
गर्मी में कर्कश हो जाए,
सर्दी में मुस्काये धूप।
चले जोर से ठंड हवायें,
इठुक करके शरमाई धूप।

सनी-सनी हवा खीजवाती,
भीनी-भीनी धूप बस याद आती।
दिल दुखाते रोजमर्रा के काम,
मन कहे रजाई में घुसकर करे आराम।
पर घड़ी शोर मचाती,
सबको ठंडी में भगाती।

बनती कितने इसके रूप,
फूलों के संग महके धूप।
अंधकार को दूर भगाये,
दुश्मन कोई नहीं डरावे।
बादल कोहरा कितना घेरे,
कभी नहीं घबराई धूप।

Lakhi Kumari
D.El.Ed (2022-24)
Roll No. - 20

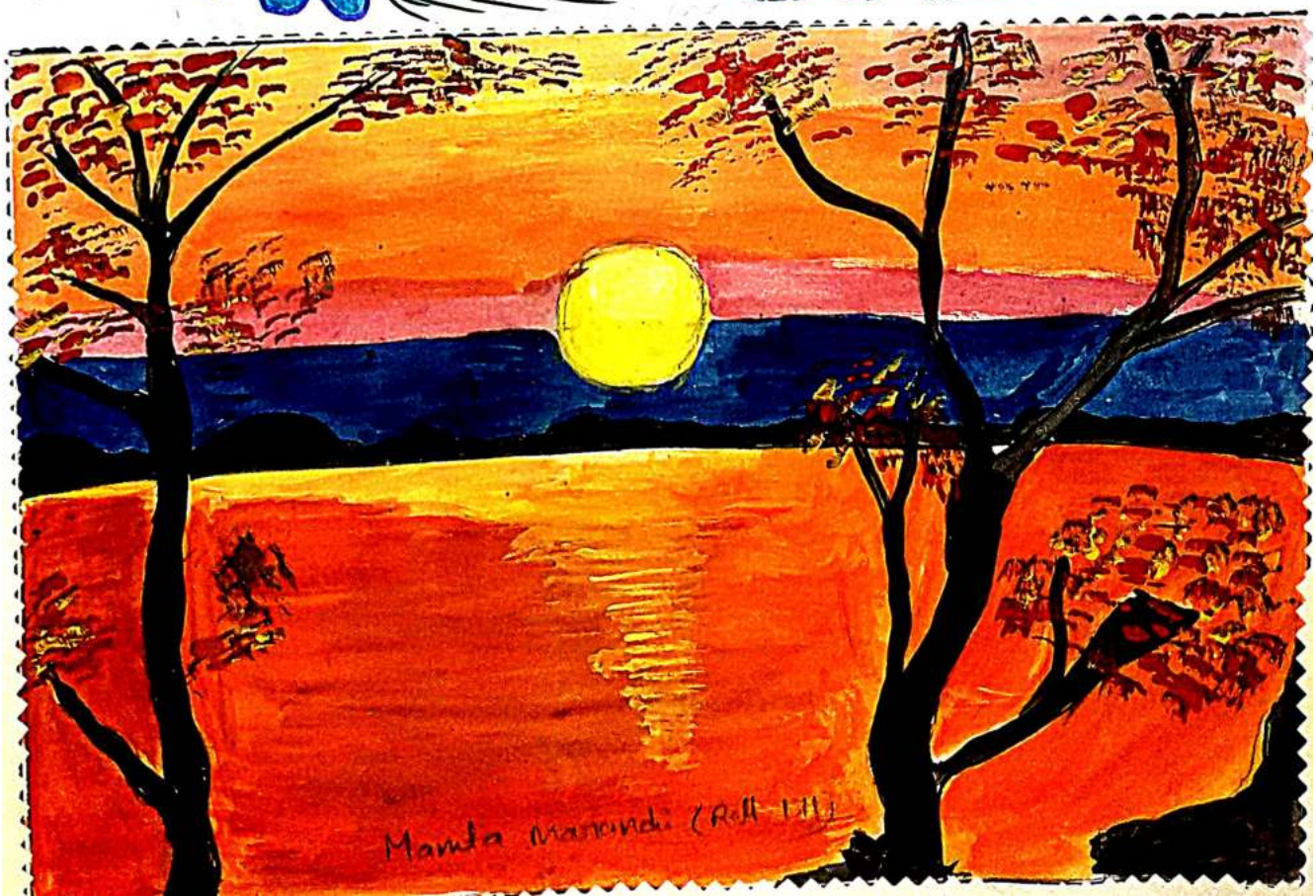

भीनी भीनी धूप

सुबह हुई पर धूप न जागी,
चिड़ियों की टोली भी भागी।
बच्चे जाग गए हैं लेकिन,
धूप नहीं है अब तक जागी।
ठंडी - ठंडी सी लगती है,
बदली - बदली सी लगती है।
अंगारों - सी थी गर्मी में,
अब भीनी - भीनी सी लगती है।

Name-Shradha Kumari
D.El.Ed [2022-24]
Roll no-13

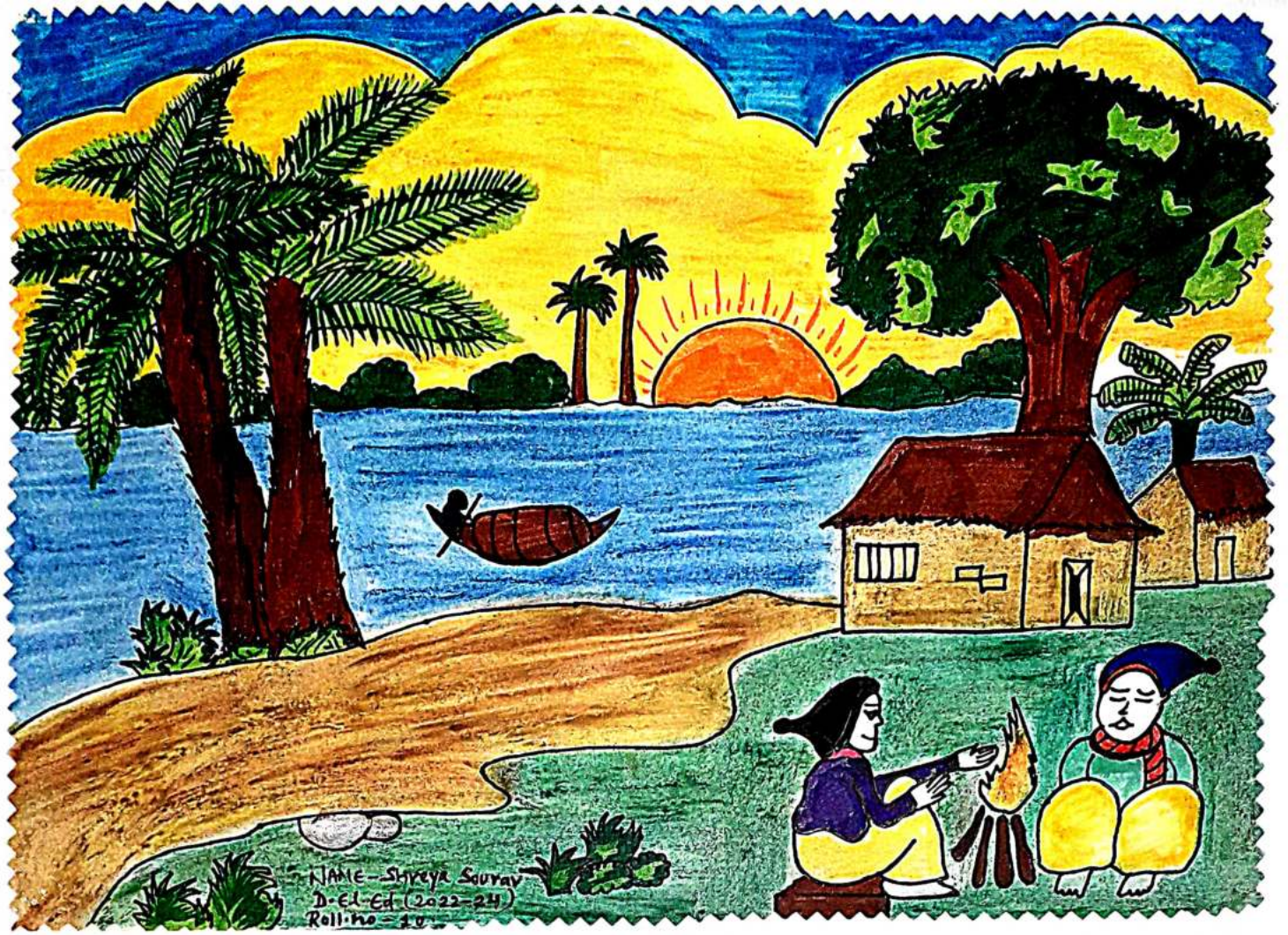

मीनी मीनी धूप

कितनी नरम सुहानी धूप,
मीनी मीनी में सहलाती धूप।
छत आंगन मे आकर बैठे,
तन-मन को बहलाती धूप।
वर्षा में कर्कश हो जाए,
मानी मानी में सहलाती धूप।
चले जोर से ठंड हवायें,
झुक करके शरमाई धूप।
बनते कितनी इसके रूप,
फूलों के संग महके धूप।
अंधकार को दूर भगाये,
दुश्मन कोई नही डराये।
बादल कोहरा कितना घेरे,
कभी नही घबराई धूप।

Name - Suhagini Tudu
Roll no. - 137 'C'
Session - 2021 - 2023

मीनी-मीनी धूप

जाड़े की मीनी-मीनी चूप,
सरसों जैसी पीली चूप।
सुबह हुई तो घर से निकली,
सोने-सी चमकीली चूप।

कुहरे की चादर में लिपटी,
लगती गीली गीली चूप।
हरियाली खेतों में फैली,
हँसती छैली-छबीली चूप।

जले फूस से, फिर बुझ जाए,
ज्यों माचिस की तीली चूप।
रोज शाम को जल्दी-जल्दी,
छिप जाए मीनी-मीनी चूप॥

Name – Sumita Marandi
Class – B.Ed 'C'
Roll no – 109

BHINI - BHINI DHOOP

NAME - Mamta Marandi, Roll - 171 'C'

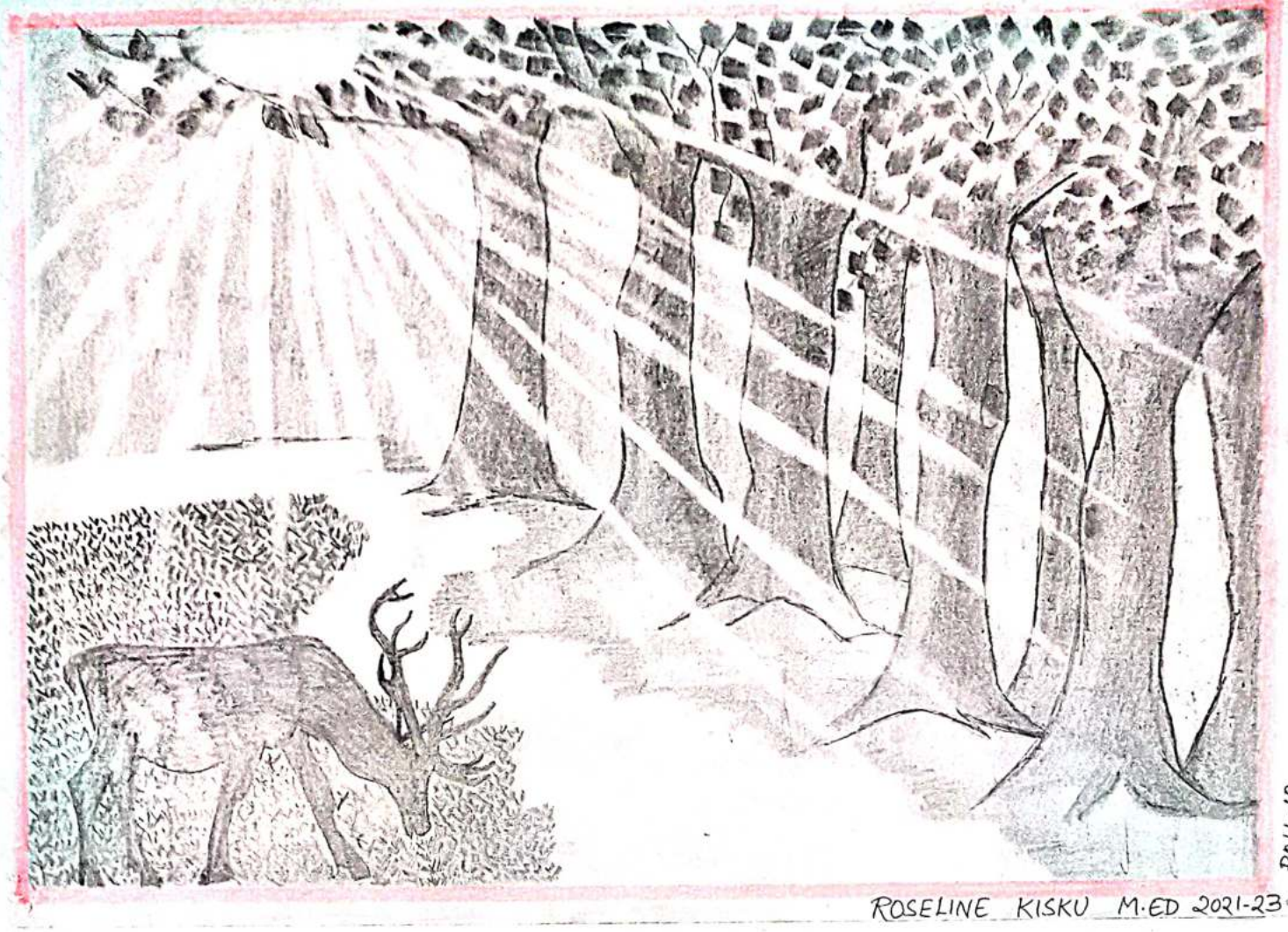

ROLL-10

ROSELINE KISKU M.ED 2021-23

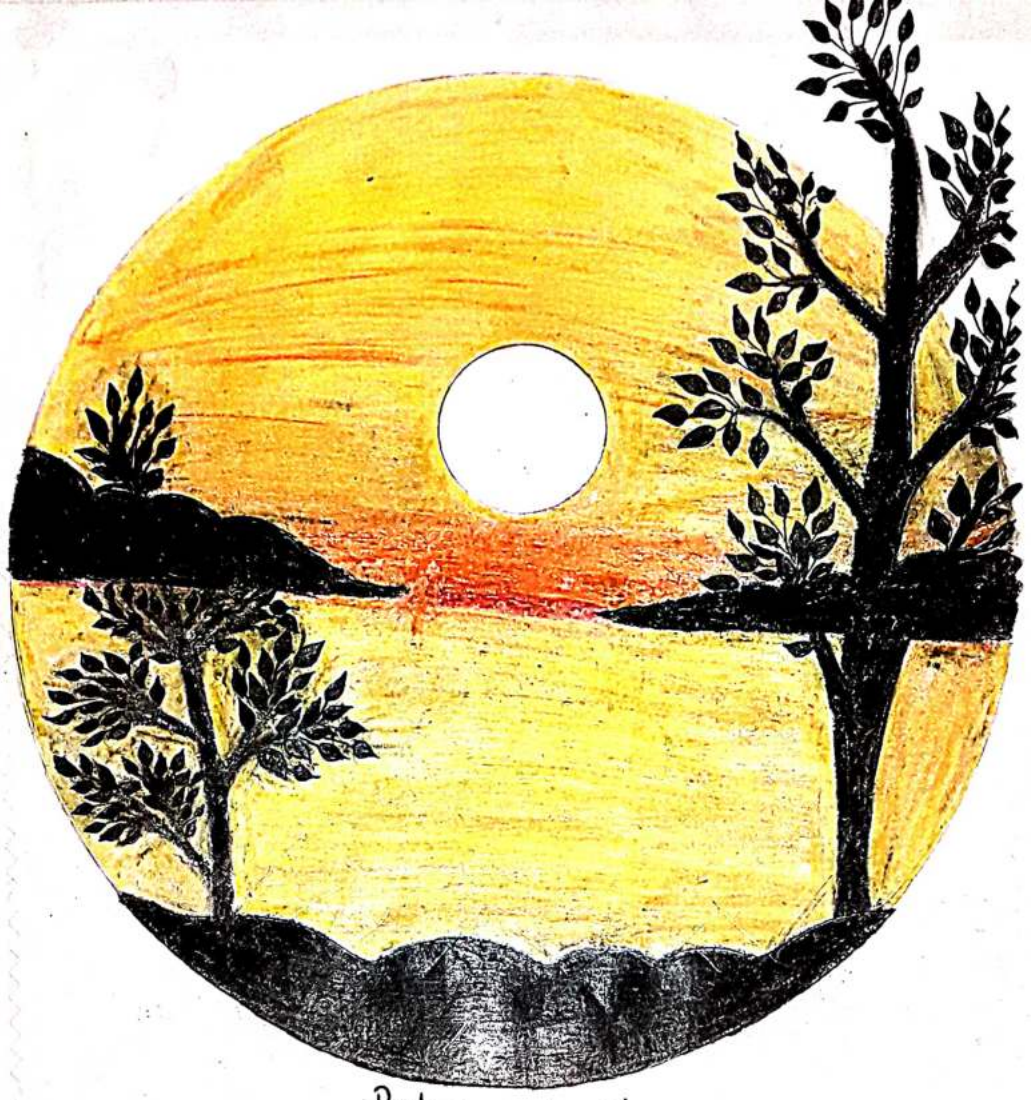

Pushpa Kumari

D.El.Ed [22-24]

भीनी भीनी धूप

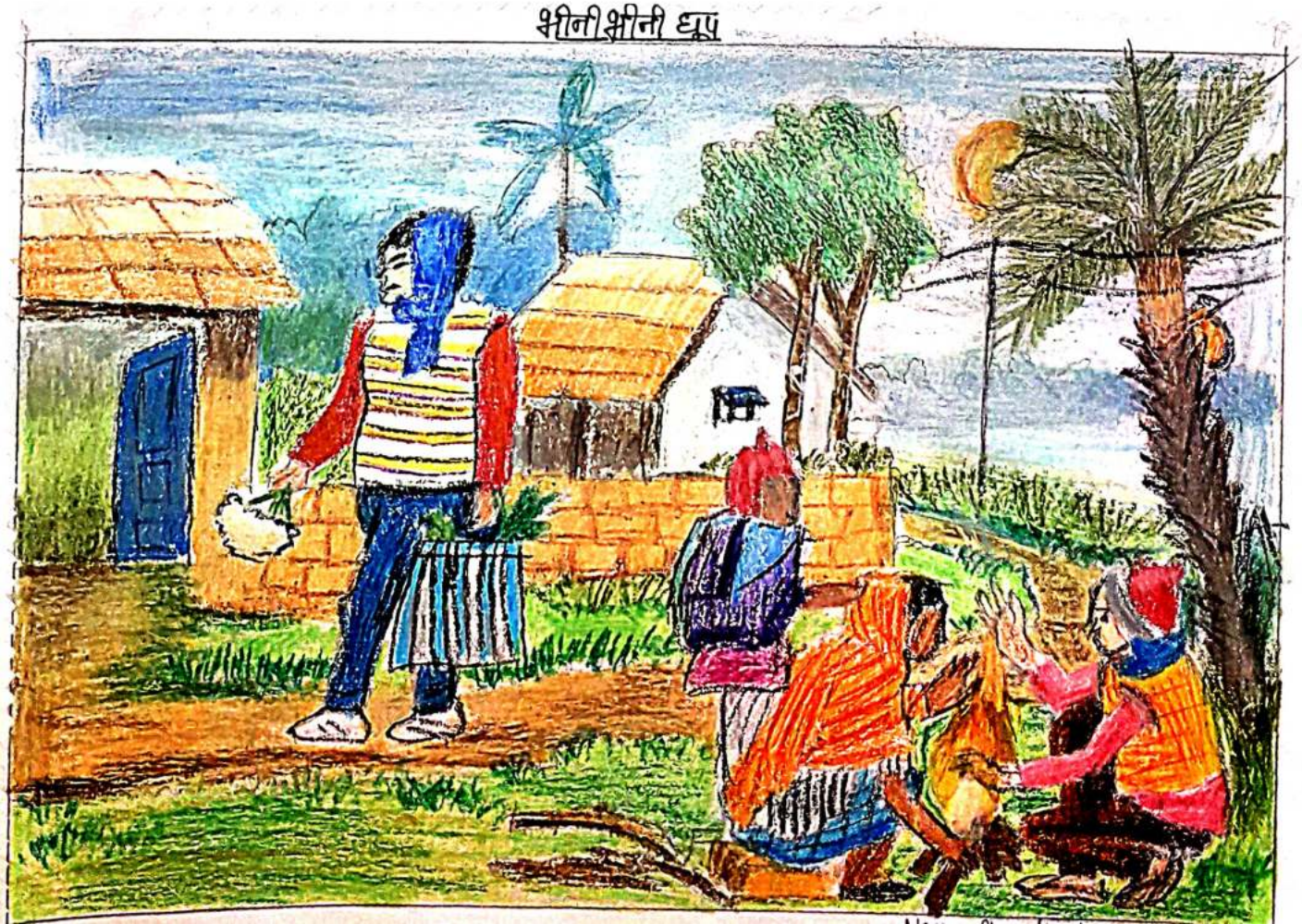

भीनी-भीनी धूप

मन ही मन मुस्कुरा रही है जाड़े की धूप
सर्द हफ्ते पन्ने गरमा रही जाड़े की धूप
उड़ती फिरती है वो नरमो-सख्त नर्म और
कड़े पन्नों पर,
हर में गीत गा रही है जाड़े की धूप

गहरी नीली शॉल में लिपटा दिखा
था चाँद पिते-पल छिन सत्र के टुकड़े
उड़ा रही है जाड़े की धूप
कब से मुक्तिला कैद थी गुलाबी
गुली में खुशबू।

सारे ख्वाब महका रही है जाड़े की धूप
उफक सुबह का आसमान से शफक शाम का
आसमान तक बह रही है तेरी रोशनी
दिल में जख्म सहला रही है जाड़े कि
धूप जिंदगी वक्त के धुंध में और दिखती नहीं।

Name - Anita Kumari
Roll No. - 101
sec - c

Bhini bhini dhoop

NAME- Raazjah Sultana
Roll No - 95

झीनी-झीनी धूप

शीत ऋतु के आगमन के साथ ही मौसम काफी ठंडा हो जाता है। ग्रीष्म ऋतु में जो धूप हमें अच्छी नहीं लगती थी वह धूप अब हमें बहुत प्यारी लगने लगती है। सर्दियों में निकलने वाली यह झीनी-झीनी धूप इतनी अच्छी लगती है कि ऐसा लगता है बस दिनभर धूप में ही बैठे रहें। सर्दियों में धूप में बैठने का अपना ही मजा है। यह ना केवल आपको ठंड के मौसम में गर्माहट देती है बल्कि कई तरह की स्वास्थ्य समस्याओं से भी बचाती है। सर्दियों की ये झीनी-झीनी धूप हमारे स्वास्थ्य के लिए काफी फायदेमंद होती है। हम सभी ये जानते है कि धूप से हमें विटामिन डी मिलता है जो हड्डियों को मजबूत बनाने में मदद करता है। ठंड के मौसम में सुबह होते ही सभी बड़े-छोटे झीनी-झीनी धूप में का आनंद लेने के लिए छत पर चले जाते हैं और इसका आनंद लेते है।

Name - Renuka Dutt Renu
class - D.el.ed 1st year
Roll No - 05
session - 2022-24

भीनी भीनी धूप

उतरी है मन के आँगन में
आज सुनहरी धूप,
अँधियारे कोनों का फिर से
लगा निखरने रूप।
बरसों के सोये सपने भी
आज रहे हैं जाग
सूने सुर का पहले सा अब
दिखता नहीं विराग

मुरझाई आशा में होता
जीवन का संचार,
चेतनता को मिला हृदय का
एक नया संसार
चटक उठीं भावों की कलियाँ
अपने रंग बिखेर
अवसादों के घेरों ने भी
लिया चेहरा फेर

Name - Banni Kumari
Roll No. - 147
Session - 2021-23
Sec :- 'C'
Sem :- IInd

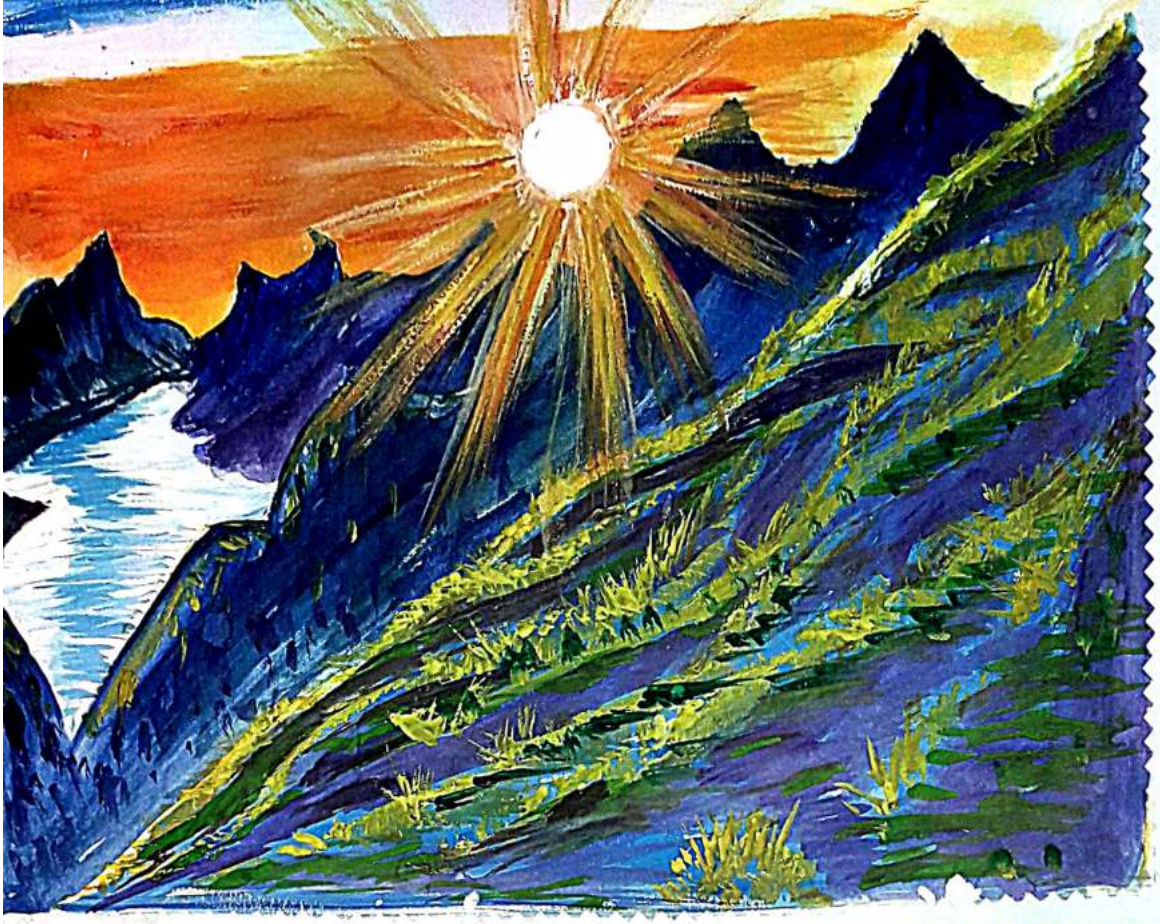

Mamta Mavandi
Roll no- 171

BHINI - BHINI DHOOP

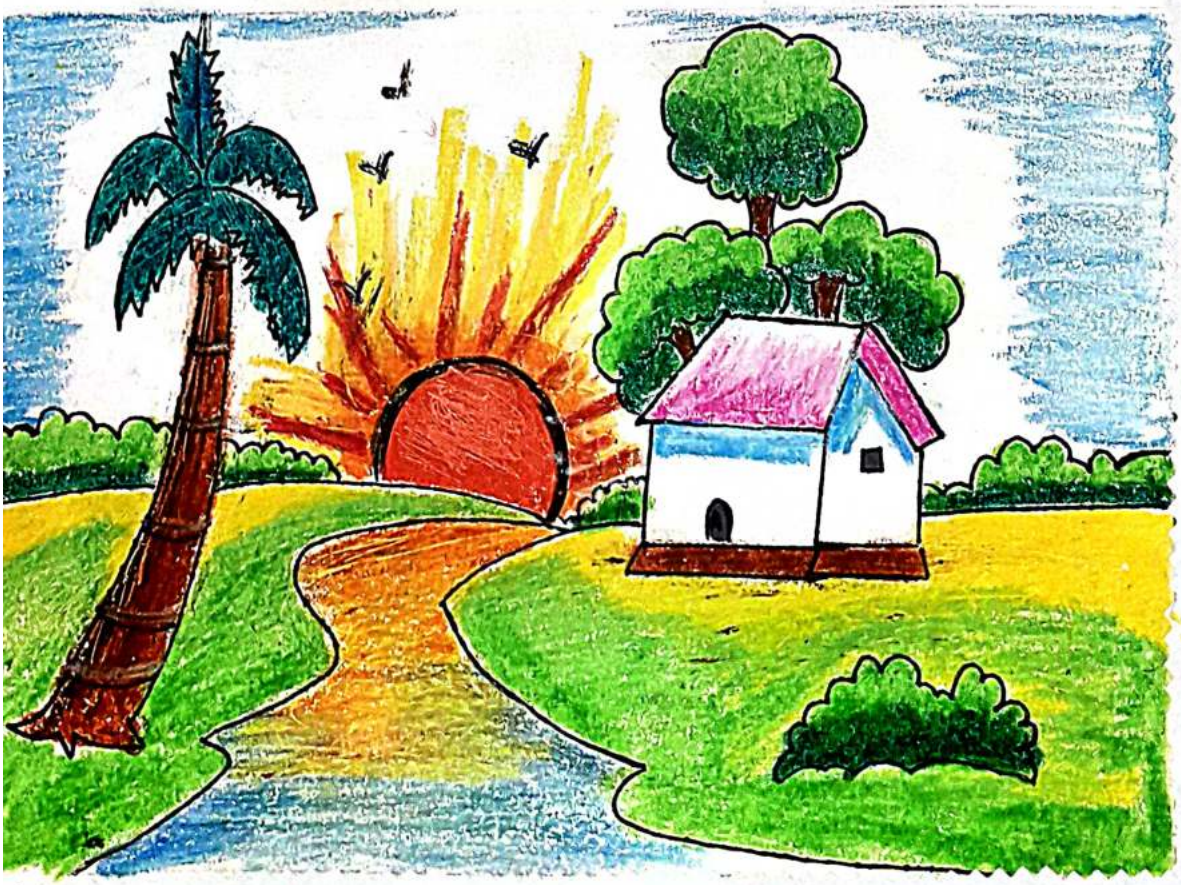

Angela Chhawchharia
Roll-177 Sec- 'C'

झीनी-झीनी धूप

सुबह सवेरे सोनपरी - सी,
घर की छत पर आती धूप ।
अपनी झोली से किरणों के,
मोती खूब लुटाती धूप ।

गाँव - गाँव और गली - गली में,
फूल - फूल और कली - कली में,
ओढ़ चुनरिया रंग - बिरंगी,
मंद - मंद मुसकाती धूप ।

झाड़ी - झुरमुट नदी रेत में,
खड़ी फसल खलिहान खेत में,
बाग - बगीचा ताल - तलैया,
दूर - दूर तक जाती धूप ।

घिरें मस्त बादल कजरारे,
नभ में फिरते पाँव पसार,
लुका - छिपी का खेल खेलती,
बादल में छिप जाती धूप ।

पूरब से पश्चिम तक जाते,
कोमल पग उसके थक जाते,
अलसाई पलकों से आखिर
संध्या को सो जाती धूप ।